OM-1- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 15/03/2021 11:30 AM Page 9

मानसरोवर-शांतिवन। नवनिर्मित मानसरोवर उद्घाटन के अवसर पर शिव ध्वज लहराते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, राजयोगिनी दादी इशू, राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई, राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, राजयोगी ब्र.कु. भुपाल भाई, ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई, ब्र.कु. राज दीदी तथा संस्था के अन्य वरिष्ठ भाई-बहनें।

# बदलें... पर अपनी संस्कृति न बदलें

समय के साथ हर चीज़ बदलती है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। पदार्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। उसी तरह कोई भी चीज़ नई से पुरानी होती ही है। सिवाय 'परिवर्तन' के सब कुछ परिवर्तन होता है। बस 'परिवर्तन' शब्द ही अपरिवर्तनशील है। हम अपने ही बारे में बात करें तो हम पहले कितनी नम्रता और दिव्यता से भरपूर थे। जहाँ एक-दूसरे का आदर-सम्मान करते हुए स्नेहपूर्वक रहते थे। जिसे हम एक शब्द में कहें, तो स्वर्णिम भारत की ये एक झलक है। जहाँ आपसी आदर-सम्मान के साथ-साथ नम्रता, सभ्यता की भी प्रखरता थी। शुरू से हमारी ये संस्कृति रही है, छोटे-बड़ों को झुककर प्रणाम कर आदर-सम्मान व्यक्त करते थे। करते तो आज भी हैं, पर सिर्फ केवल शिष्टाचार के रूप में। झुककर प्रणाम करना और आदर करना, ये हृदय से होता है। लेकिन आज शिष्टाचार सिर्फ एक बाह्यता का रूप बनकर रह गया है। इसीलिए आज के समय में आये दिन छोटे-बड़े परिवार व समाज तथा देश-विदेश में आपस में झगड़ों की दीवारें खड़ी हो गई हैं। कलह-कलेश तो हरेक में ऐसे घर कर गया है जैसे कि एक डायबिटिक पेशेंट में शुगर। ये एक ऐसा कैंसर है जिसके लिए आज न तो कोई हॉस्पिटल है और न ही कोई स्कूल, जहाँ इसका निदान हो सके। परिणामस्वरूप कितने ही सारे परिवार टूटते जा रहे हैं, समाज विघटित होता जा रहा है। इसके तह में जायें तो हम पायेंगे कि सिर्फ सहृदय से प्रणाम करना हम कहीं भूल चुके हैं। इसी का एक संदर्भ महाभारत में आता है, जो यहाँ लिखना उचित होगा। महाभारत का युद्ध चल रहा था। एक दिन दुर्योधन के व्यंग्य से आहत होकर 'भीष्म पितामह' घोषणा कर देते हैं कि - 'मैं कल पांडवों का वध कर दूंगा।' उनकी घोषणा का पता चलते ही पांडवों के शिविर में बेचैनी बढ़ गई। भीष्म की क्षमताओं के बारे में सभी को पता था, इसलिए सभी किसी अनिष्ट की आशंकाओं से परेशान हो गये। तब श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा - 'अभी मेरे साथ चलो।' श्रीकृष्ण द्रौपदी को लेकर सीधे भीष्म

पितामह के शिविर में पहुंच गये। द्रौपदी ने अंदर जाकर पितामह भीष्म को प्रणाम किया तो उन्होंने - 'अखण्ड सौभाग्यवती भवः' का आशीर्वाद दे दिया। फिर उन्होंने द्रौपदी से पूछा कि 'वत्स- तुम इतनी रात में यहाँ अकेली कैसे आई हो! क्या तुम्हें श्रीकृष्ण यहाँ लेकर आये हैं?' तब द्रौपदी ने कहा - 'हाँ, और वे कब से बाहर खड़े हैं।' तब भीष्म भी कक्ष से बाहर आ गये और दोनों ने एक-दूसरे को प्रणाम किया।

भीष्म ने कहा- 'मेरे एक वचन को मेरे ही दूसरे वचन से काट देने का काम श्रीकृष्ण ही कर सकते हैं।'

शिविर से वापस लौटते समय श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि 'तुम्हारे एक बार जाकर पितामह को प्रणाम करने से तुम्हारे पतियों को जीवदान मिल गया है। अगर तुम प्रतिदिन भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य आदि को प्रणाम करती होती और दुर्योधन, दुशासन आदि की पत्नियाँ भी पाण्डवों को प्रणाम करती होतीं तो शायद इस युद्ध की नौबत ही न आती।'

वर्तमान समय हमारे घरों में जो इतनी समस्यायें हैं, झगड़े हैं, उनका भी मूल कारण यही है कि जाने-अनजाने अक्सर घर के बड़ों की उपेक्षा हो जाती है। यदि घर के बच्चे और बहुयें प्रतिदिन घर के बड़ों को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद लें तो शायद किसी भी घर में कभी कोई कलेश न हो। बड़ों के दिये आशीर्वाद कवच की तरह काम करते हैं। उन्हें कोई 'अस्त्र-शस्त्र' नहीं भेद सकता। अतः यदि हम हमारी पूर्ववत संस्कृति को सुनिश्चित कर नियमबद्ध करें तो घर स्वर्ग बन जाये। क्योंकि आदर-सम्मान व प्रणाम प्रेम है, अनुशासन है, शीतलता है, आदर सिखाता है, सुविचार आते हैं, झुकना सिखाते हैं, क्रोध मिटाते हैं, आंसू धो देते हैं, अहंकार मिटाते हैं। ये हमारी संस्कृति है।

तो अब आपके मन में क्या ख्याल चल रहे हैं? ये पढ़ने के बाद क्या आप हिम्मत कर पा रहे हैं कि हम अपनी संस्कृति को पुनः जागृत कर विचार और कर्म के धरातल पर उतारेंगे? अगर हाँ, तो बस आरंभ कर दीजिये। तब आप बहुत सारी चीज़ों से बच जायेंगे। आपकी शक्ति, एनर्जी बच जायेगी और नई ऊर्जा के साथ आप अपनों से घुल-मिल जायेंगे और खुशी का औरा आपके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जायेगा। - ब्र.कु. निहा,मुम्बई

फरीदाबाद-हरियाणा(से.-21)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए अनीता शर्मा,महिला मोर्चा की जिलाध्यक्षा। साथ मंचासीन हैं किम्मी सिंगला,सिविल जज, तान्या लूथरा,लायंस क्लब प्रसिडेंट, ब्र.कु. हरीश दीदी, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. प्रीति तथा ब्र.कु. रंजन बहन।

## ! यह जीवन है !

अगर हमसे अनायास एक गलती हो जाती है तो ज़रूर वह क्षम्य है मगर उसे छुपाने के लिए झूठ बोलकर दूसरी गलती करना यह ज़रूर दंडनीय है।

भूल होना कोई समस्या नहीं, बिना भूल किये कुछ सीखने को नहीं मिलता। परंतु एक भूल को कई बार करना यह ज़रूर चिंता का विषय है। भूल को छिपाना यह और भी खतरनाक है।

झूठ उस कवर की तरह है जिसमें उस समय दोष ढक ज़रूर जाते हैं मगर नष्ट नहीं हो पाते।

समय आने पर वो छोटी भूल बड़ी गलतियों का कारण बन जाती हैं।

गलती हो जाए तो उसे स्वीकारना सीखें। आपका स्वीकारना ही आपको दूसरों की नज़रों में क्षमा का अधिकारी बना देगा।

बलौंगी-मोहाली(पंजाब)। 85वीं त्रिमूत्रि शिव जयंती पर बलौंगी के रामलीला ग्राउंड में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. प्रेमलता दीदी। मंचासीन हैं सरपंच बहादुर सिंह व दिनेश तथा ब्र.कु. अमन।

सुगौली-बिहार। त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर चीनी मील के जी.एम. साकेत संबल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीरा बहन। साथ हैं ब्र.कु. राम इकबाल।

लखना-उ.प्र.। 85वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजा रोहण करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. वन्दना, बहेड़ा पार्क के मालिक विजय प्रताप, रॉयल हैप्पी किड्स के प्रिंसिपल प्रकाश जी, ब्र.कु. जगत, ब्र.कु. मनोज तथा अन्य।